Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **14.04.2017** स्थान, जर्मनी।

मोहतरम प्रो. डाक्टर अशफ़ाक़ अहमद साहब मरहूम (पाकिस्तान) मोहतरम मौलवी एच. नासिरुददीन साहब, मुबल्लिग़-ए-सिलसिला (इन्डिया) मोहतरमः साहिबज़ादी अमतुल वहीद बेगम पत्नि मोहतरम मिर्ज़ा ख़ुर्शीद अहमद साहब (पाकिस्तान) के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कुछ प्रबन्धन सम्बंधी बातों के विषय में ध्यान दिलाया तथा फ़रमाया-

आज के ख़ुत्बः के लिए पहले तो मैंने कुछ अन्य विषयों का चयन किया था परन्तु फिर कुछ मरहूमों का जनाज़ा पढ़ाना था, उनकी कुछ बातें सामने आ गईं इस लिए आज मैंने सोचा है कि उन्हीं का वर्णन करुंगा। जिनमें से एक शहीद है, एक सिलसिले के मुरब्बी हैं तथा एक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पोती हैं। इन लोगों की कुछ विशेषताएँ हैं जो जमाअत के प्रत्येक वर्ग के लिए एक सुन्दर नमूना हैं और यही ऐसी बातें हैं जो हममें से अनेक लोगों के लिए अनुसरणीय उदाहरण हैं, अनेक लोगों के लिए इनमें शिक्षा है। अतः मैंने सोचा कि बजाए इन मरहूमों के संक्षिप्त वर्णन के, कुछ खोल कर इनके विषय में बयान करूँ। प्रत्येक के जीवन चरित्र के जो पहलू मेरे सामने लाए गए हैं अथवा जो मेरी जानकारी में थे, वे ऐसे हैं जो مِّنَ قَضٰی نَحۡبَہٗ का चरितार्थ इन लोगों को बनाते हैं जो अपने ओहदों तथा अपनी धारणाओं और अपने निश्चय को पूरा करने वाले लोग थे। जिन्होंने दीन को दुनया पर प्राथमिकता देते हुए अपने जीवन व्यतीत किए और इसी अवस्था में ख़ुदा तआला के समक्ष उपस्थित हो गए। इनमें से पहले हमारे शहीद भाई प्रो. डा. अशफ़ाक़ अहमद साहब हैं जो पिछले जुम्अः को शहीद किए गए। प्रो. डा. रिटायर्ड अशफ़ाक़ अहमद साहब, शेख़ सुलतान अहमद साहब, लाहौर के बेटे थे। इनकी आयु 68 वर्ष थी। पिछले जुम्अः को ये जुम्अः की नमाज़ अदा करने के लिए अपनी कार में बैतुल-तौहीद जा रहे थे कि रास्ते में एक मोटर साईकिल सवार अहमदियत के दुश्मन ने फ़ायरिंग करके इन्हें शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

शहीद मरहूम के परिवार में अहमदियत की स्थापना, शहीद मरहूम के दादा मुकर्रम शेख़ अब्दुल क़ादिर साहब के द्वारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लुधियाना आगमन के ज़माने में हुई। मरहूम अल्लाह की कृपा से मूसी थे, ख़िलाफ़त के साथ बड़ा प्रेम था, तहज्जुद पढ़ने वाले तथा मेहमानों का स्वागत करने वाले और समाज सेवा करने वाले, ओहदेदारों का आज्ञा पालन करने वाले, नेक और निष्ठावान व्यक्ति थे। सदैव जमाअत की सेवा के लिए अग्रसर रहते थे तथा अत्यंत उच्च आचरण वाले थे

दावत इलल्लाह का बड़ा चाव था। उच्च शिष्टाचार एवं मेल जोल वाला स्वभाव होने के कारण अपने विद्यार्थियों तथा सहकर्मी प्रोफ़ैसरों में अत्यधिक विख्यात थे। अपने साथी प्रोफ़ैसरों को घर पर खाने के लिए बुलाया करते थे तथा जमाअत का प्रभाव पूर्ण परिचय कराते। इसी कारण से कई बार आपको धमकियाँ भी मिलती थीं परन्तु कभी चिंता नहीं की, बल्कि कहा करते थे कि यह तो सामान्य बात है। बचपन से ही शहीद मरहूम को अत्यधिक जमाअत का सेवा भाव था तथा जमाअती एवं तंज़ीमी स्तर पर भिन्न भिन्न विभागों में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हलक़ा सबज़ा ज़ार में निवास के

पश्चात हलक़े के सदर तथा नायब ज़ईम-ए-आला के रूप में सुन्दर रूप से सेवा का सामर्थ्य मिला। इस वर्ष आपकी नियुक्ति सैक्रेट्री दावत इलल्लाह इमारत अल्लामा इक़बाल टाउन लाहौर हुई थी तथा बड़े अच्छे रूप में आपने अपनी दावत इलल्लाह का शुभारम्भ किया था, प्रोग्राम बनाए थे। उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. के ज़माने में एक सपना देखा था। इनके भाई कहते हैं- वह सपना इस प्रकार था, कहते हैं कि मैंने देखा कि हमारे मोहल्ले की एक मस्जिद जो कि ग़ैर जमाअत वालों की है, वहाँ घोषणा हो रही है कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. का निधन हो गया है और मैंने देखा कि घर के लैटर बाक्स में एक छुरी पड़ी हुई है। तो इस प्रकार एम टी ए के माध्यम से जो घोषणा होती रही, इस प्रकार वह सपना भी पूरा हो गया और छुरी जो देखी थी इन्होंने, वह इनकी शहादत की ओर संकेत था। कहते हैं कि हमारे भाई हम पर प्राथमिकता ले गए। परिवार का नाम रौशन किया शहादत के स्तर को पाकर, परिवार के पहले शहीद बनकर हम सबके लिए सदा के लिए उदाहरण स्थापित कर गए। अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलन्द करे। इनके छः भाई और एक बहिन हैं जो लगभग सभी बाहर ही हैं।

दूसरे मरहूम जिनका वर्णन करना है, वे मुकर्रम एच. नासिरुद्दीन साहब, मुबल्लिग़ इंचार्ज, ईस्ट गोदावरी, इन्डिया हैं। गोदावरी नदी में डूब जाने के कारण 42 वर्ष की आयु में निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। दुर्घटना के समय आप मुकर्रम अमीर साहब सिकन्दराबाद तथा जमाअत के अन्य लोगों के साथ बांगल पोड़ी जमाअत में फ़ज्र की नमाज़ के बाद नदी पर गए, अच्छा तैरना जानते थे। वहाँ कुछ दोस्तों के साथ तैरते हुए लापता हो गए फिर मछियारों की सहायता से एक घन्टे की खोज के पश्चात नदी के किनारे उनका शव मिला। मरहूम के पिता मुकर्रम ए. शाहुल हमीद साहब अपने क्षेत्र कावाशेरी केरला के सबसे पहले अहमदी थे। उन्हीं के द्वारा वहाँ जमाअत की स्थापना हुई जबकि आपकी वालिदा मोहतरमा चेलाकेरा के आरम्भिक अहमदियों में से थीं। मरहूम 2000 ई. में क़ादियान से परीक्षा पूरी करके मुबल्लिग़ इंचार्ज ईस्ट गोदवारी के रूप में नियुक्त थे। उनकी पत्नि कहती हैं कि कई ऐसे स्थानों पर भी रहना पड़ा जहाँ केवल जमाअत के सैन्टर स्थापित थे, वहाँ पत्नि और बच्चों को ले जाकर नमाज़ पढ़ा कर दर्स देते थे और यह क्रम निधन से एक दिन पहले तक जारी रखा। मुरब्बियों के लिए मुबल्लिग़ों के लिए इसमें शिक्षा है कि यदि जमाअतें दूर दूर हैं, कोई नहीं भी आता तब भी नमाज़ें जमाअत के साथ होनी चाहिएँ चाहे अपने घर वालों के साथ पढ़ें। फिर इनकी पत्नि बताती हैं कि जब आप कामा रैड्डी में नियुक्त थे तो वहाँ लीफ़ लैट्स बाँटने पर आपका विरोध बढ़ गया, पकड़े गए, विरोधियों ने मारा पीटा परन्तु आप केवल अल्लाह की कृपा से बाल बाल बच गए। इसके बाद, पत्नि कहती हैं कि मैंने इन्हें कहा कि यहाँ तो बड़े भयानक हालात हैं। केरला में तबादले की प्रार्थना कर दें क्यूँकि आपके साथ दुश्मनी अत्यधिक बढ़ गई है तो कहने लगे ठीक है, मैं दुश्मनी का वर्णन करके केन्द्र को लिखूंगा, सम्भवतः केन्द्र तबादला भी कर दे परन्तु यहाँ के स्थाई निवासी अहमदियों का कहाँ तबादला करेंगे। उनके लिए तो दुश्मनी उसी प्रकार क़ायम है तो कहते हैं कि विरोध के डर से भागना, यह कोई उचित बात नहीं है। इस लिए हमें अपने वक़्फ़ की प्रतिज्ञा को पूरी करनी चाहिए, हम वक़्फ़ करके आए हैं और जैसे भी हालात हैं हमें यहाँ रहना है और हमें रहना चाहिए। यही कहा करते थे कि यदि शहादत का सौभाग्य मिल गया तो फिर इससे बड़ा इनाम क्या है और इस लिए हमें यहीं रहना है।

इसी प्रकार सादगी का यह हाल था कि पत्नि बताती हैं कि कोई फ़र्नीचर कभी नहीं ख़रीदा था। घर में कोई व्यक्तिगत फ़र्नीचर नहीं था और सदैव कहा करते थे कि हम वक़्फ़-ए-ज़िन्दगी हैं, जमाअत जहाँ कहती है हमने वहाँ जाना है इस लिए कहीं कभी फ़र्नीचर और घर का सामान जो है, हमारे तुरन्त तबादले में रोक न बन जाए। जो सुविधा जमाअत ने दी हुई है उसी पर हमने गुज़ारा करना है और उसी पर आश्रय करना चाहिए। यह भी एक उदाहरण है एक वाक़िफ़-ए-ज़िन्दगी के लिए।

गतवर्ष अमला पुरम में तबादला हुआ था, वहाँ बच्चों को क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाने के इतने पाबन्द थे कि एक कि.मी. पैदल रोज़ाना अथवा साईकल से जाकर लोगों को पढ़ाकर आते थे क़ुर्आन शरीफ़। यह भी एक उदाहरण है मुबल्लिग़ों और मुरब्बियों के लिए।

फिर इनकी पत्नि ने बताया कि मेहमान नवाज़ी की बड़ी विशेषता थी इनमें। कहती हैं यदि मैं बच्चों की छुट्टियों के अवसर पर अथवा स्कूल से छुट्टियों के अवसर पर केरला आने के कारण घर में न होती और मेहमान आ जाते तो कभी उन्होंने परेशानी नहीं दिखाई। सदैव स्वयं ही खाना पकाकर मेहमानों को खिलाया करते थे। शहादत की भी इनमें बड़ी अभिलाषा थी, पहले वर्णन हुआ। उन्होंने कहा कि मैंने बार बार हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु तथा अपने वालिद मरहूम को सपने में देखा है कि मेरे वालिद मुझे इशारा कर रहे हैं और मुझे बुला रहे हैं। तो एक रंग में इनकी शहादत इस प्रकार भी हो गई। दीन की ख़िदमत के लिए गए हुए थे और वहीं इस दीनी दौरे के समय ही इनका निधन हो गया। यह भी शहादत है एक प्रकार की। बड़े दुआएँ करने वाले, तहज्जुद पढ़ने वाले, मिलनसार तथा तबलीग़ के मैदान में एक निडर मुजाहिद थे। कई बार विरोधियों ने इन्हें बन्दी बनाकर रखा और मार पीट की। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इसका वर्णन मैं एक बार अपने ख़ुत्बों में कर चुका हूँ जो घटनाएँ जलसे के भाषणों में सुनाता हूँ उनमें भी इनकी घटना सुनाई थी मार पीट की, जो भयानक रूप में मौलवियों ने इनको मारा था।

इनकी वालिदा हैं वृद्धावस्था में, अन्य परिवार में पत्नि और दो बेटे हैं। दो बड़े भाई हैं इनके, एक सुलेमान साहब अमीर-ए-ज़िला पालघाट केरला और एच. शमसुद्दीन साहब नज़ारत नश्रो इशाअत क़ादियान के मलियालम सैक्शन में इस समय सेवा का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं।

इनके साथ सेवा की तौफ़ीक़ पाने वाले मुबल्लिग़ नवीदुल फ़तह साहब कहते हैं कि मौलाना एच. नासिरुद्दीन साहब सिलसिले की प्रगति के लिए प्रत्येक काम करने के लिए तत्पर रहते थे। बड़ा ही प्यार करने वाला वजूद थे। आलिम बा अमल थे प्रतिदिन तहज्जुद पढ़ते, प्रतिदिन यथावत शिक्षा एवं प्रशिक्षण का प्रबन्ध करते। दफ़्तर के काम के लिए अनिवार्य रूप से प्रतिदिन एक विशेष समय निश्चित किया हुआ था। बड़ों का सम्मान करना इनका एक विशेष गुण था। छोटों से सुन्दर व्यवहार भी एक विशेष गुण था प्रतिदिन यथावत रूप से बाहर निकलते, कोई भय नहीं था, विरोधी हैं तो क्या करेंगे तथा इसी कारण से ग़ैर अहमदियों में भी सम्पर्क इनका बड़ा विस्तृत था क्यूँकि उनके साथ भी बड़े सुन्दर शिष्टाचार से मिलते थे, बड़े सुन्दर आचरण वाले थे। कहते हैं मैंने कभी इनके चेहरे पर सलवट नहीं देखी, कभी क्रोध में नहीं देखा। अपने साथी मुअल्लिमों से भी बड़ा सुन्दर व्यवहार करते, सदैव उनका ध्यान रखते तथा प्रत्येक से ऐसा प्रेम था कि हर कोई जो इनसे मिलता था वह इनका प्रेमी हो जाता था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का बड़ी लगन से अध्ययन करते, यथावत अध्ययन था इनका तथा बड़ा सुनियोजित था, इसके लिए समय निश्चित किया हुआ था इन्होंने विशेष रूप से और यह भी प्रत्येक मुबल्लिग़ और मुरब्बी के लिए एक आवश्यक शिक्षा है। क़ुर्आन मजीद की तिलावत से कभी ग़ाफ़िल न रहते। डायरी प्रतिदिन यथावत रूप से लिखते तथा सदैव यह आदत रही कि ख़िलाफ़त की ओर से जो बात कही जाए उसको ध्यान पूर्वक सुनना है। सदैव खुत्बः को बड़े विवेक पूर्ण होकर सुनते और फिर न केवल सुनते बल्कि यह प्रयास होता कि पूर्ण रूप से आज्ञा पालन करना है कोई बहाने नहीं बनाने बल्कि एक एक शब्द के अनुसार काम करने का प्रयास करते थे और यह भी एक बड़ी महत्त्व पूर्ण बात है वाक़्फ़न-ए-ज़िन्दगी के लिए। ख़िलाफ़त से बड़ा प्रेम करने वाले थे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इश्क़ व मुहब्बत अत्यधिक था और कहते हैं ये ऐसी विशेषताएँ थीं जो इनके अस्तित्व में विशेष रूप से दिखाई देतीं थीं। एक मुअल्लिम साहब हैं, वज़ीर साहब, वे कहते हैं कि मैंने इनको सदैव तहज्जुद पढ़ने वाले और नमाज़ों को अत्यधिक शौक़ से पढ़ने वाला, रोज़ाना तिलावत करने वाला, बड़े प्रसन्न चित तथा बाअमल पाया, खिलाफ़त से विशेष प्रेम था। जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का विशेष रूप से ध्यान रखते, अच्छे मेहमान नवाज़, सादगी पसन्द, व्यर्थ के ख़र्चों से बचने वाले। फिर ये लिखते हैं कि मौलवी साहब को अध्ययन का बड़ा शौक़ था। कोई सवाल पूछा जाए तो बड़े अच्छे रंग में जवाब देते थे। अधिकांशतः जब भी किसी प्रोग्राम अथवा गोष्ठि में, विशेष रूप से यात्रा के समय ख़ुद्दाम के साथ बैठते तो जमाअत के विषय में वर्णन तथा ईमान वर्धक घटनाएँ सुनाया करते थे। प्रत्येक के साथ शिष्टाचार से मिलते थे जिसके कारण हर कोई इनके साथ रहना पसन्द करता था।

अल्लाह तआला इनके दर्जे भी बुलन्द करे तथा इनके बच्चों को भी संतोष और साहस प्रदान करे।

अगला वृत्तांत है मोहतरमः साहिबज़ादी अमतुल वहीद साहिबा का है जो साहिबज़ादा मिर्ज़ा ख़ुर्शीद अहमद साहब की पत्नि थीं। 10 अप्रैल 2017 को रात दस बजे लगभग 82 वर्ष की आयु में इनका निधन हुआ है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। ये हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहब की सबसे छोटी बेटी थीं और मेरी बुआ भी थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पोती और हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब की नवासी थीं। तदफ़ीन आपकी बहिश्ती मक़बरा रबवा में हुई है। इनका निकाह 26 दिसम्बर 1955 में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी. ने पढ़ाया था। अल्लाह तआला ने आपको छः बेटे अता फ़रमाए जिनमें से चार बेटे वाक़िफ़-ए-ज़िन्दगी हैं। दो डाक्टर हैं, फ़ज़्ले उमर हस्पताल में काम कर रहे हैं। एक पी. एच. डी. डाक्टर नज़ारत तअलीम में हैं और एक वकील हैं सदर अंजुमन-ए-अहमदिया में मुशीरे क़ानूनी के दफ़तर में। इनकी लजना की सेवाओं की अवधि भी लगभग 29 वर्षों पर फैली हुई है। सैक्रेट्री सनअत व तिजारत तथा नायब सदर अव्वल रहीं। अपने से ऊपर के अफ़सर का आज्ञा पालन, इस बात को छोड़ते हुए कि क्या रिश्ता है तथा क्या आयु का अन्तर है, अत्यधिक था। मेरी अहलियः ने मुझे बताया कि दो वर्षों तक जब वे सदर लजना रबवा रहीं हैं तो ये सैक्रेट्री सनअत व तिजारत तथा नायब सदर के रूप में इनके साथ काम करती रहीं तथा सदैव प्रसन्न चित और बड़ी विनम्रता पूर्वक तथा बड़े आज्ञा पालन से साथ काम किया और जो भी इनके ज़िम्मे लगाया गया उसको इन्होंने बड़ी लगन के साथ किया। इनके पति मुकर्रम मिर्ज़ा ख़ुर्शीद अहमद साहब कहते हैं कि एक वाक़िफ़-ए-ज़िन्दगी की पत्नि होने का हक़ अदा किया। मेरे से कभी कुछ नहीं मांगा, बच्चों की तर्बियत का ध्यान रखा तथा यही प्रशिक्षण का परिणाम है कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से छः बेटों में से चार वाक़िफ़-ए-ज़िन्दगी हैं और फिर अपने बच्चों के साथ साथ घर में मौजूद सेवकों के बच्चों को भी बड़े सुन्दर व्यवहार के साथ रखा यदि कोई क़ुर्आन शरीफ़ न पढ़ा हुआ होता तो उसे क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ातीं।

उनकी एक ननंद जो मेरी भाभी भी हैं, वे लिखती हैं कि हमारा उनके साथ सम्बंध बिल्कुल वैसा ही था जैसा एक माँ का अपनी बेटियों से होता है। वालिदः मोहतरमः के निधन के बाद हम सबका बड़ा ध्यान रखा। कई बच्चियों को अपने घर में पाला तथा उनकी हर प्रकार से दीनी व दुनयावी शिक्षा एंव प्रशिक्षण का ध्यान रखा। इनकी एक सबसे छोटी ननंद लिखती हैं कि मैंने एक बार इनसे पूछा कि कितनी आयु से आपने तहज्जुद पढ़नी आरम्भ की थी। उन्होंने बताया कि मैं बारह वर्ष की आयु से यथावत रूप से तहज्जुद पढ़ रही हूँ। छः बहुएँ थीं, अल्लाह तआला की कृपा से प्रत्येक के साथ इनका सुन्दर व्यवहार था तथा प्रत्येक को बेटियों की भांति रखा हुआ था।

मेरी छोटी बहिन अमतुल क़ुद्दूस साहिबा लिखती हैं कि इंसान के कर्मों में न्यूनाधिकता तो होती रहती है फिर भी उनकी घुट्टी में यह बात शामिल थी कि क़ुर्आन व हदीस के साथ घनिष्ट सम्बंध था। नेकी तो जैसे इनकी प्रकृति का अंग थी। जब देखती कि हमारी प्रथा एवं शिक्षा के विरुद्ध बात हुई है तो खुलकर उसके विरोध में बोलतीं थीं। इनके बेटे ने लिखा कि ख़िलाफ़त से पहले तो जो आपके संग सम्बंध था, वह और था इसके बाद कहने लगीं कि भतीजे का रिश्ता समाप्त हो गया, अब केवल ख़िलाफ़त का रिश्ता शेष रह गया है। फिर यह बेटा लिखता है कि जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. के निधन की सूचना मिली तो हम सब लोग नमाज़ के लिए मस्जिद गए हुए थे और हमारी अम्मी भी बड़े शोक में थीं तो उस समय मेरी बड़ी भाभी ने ऊँची आवाज़ में रोना शुरु कर दिया तो अम्मी ने उसे कहा कि चुप हो जाओ, इस समय जमाअत पर परीक्षा की घड़ी है तथा यह दुआओं का समय है इस लिए दुआएँ करो।

रज़ाई रिश्तों (जिन बच्चों ने एक ही माँ का दूध पिया हो) का अत्यधिक ध्यान रखने वाली थीं, तो ये सारे गुण थे इनमें। अल्लाह तआला इनके बच्चों में भी ये विशेषताएँ जारी फ़रमाए तथा ख़िलाफ़त के साथ निष्ठा का सम्बंध इनका हो और अल्लाह तआला दर्जे बुलन्द फ़रमाए इनके।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- नमाज़ों के पश्चात मैं इन मरहूमों का जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊँगा।